IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के विकास में महिलाओं के योगदान का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रो. जयश्री राठौड़[1] महेश कुमार नागर[2]

1.शोध पर्यवेक्षक, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा(राज.)

2.शोधार्थी, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा(राज.)

सारांश

राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में विश्व में सराहनीय हैं और जो धार्मिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में विशेष स्थान रखता हैं। राज्य में शहरी और विदेशी पर्यटक नगरीय क्षेत्रों के भ्रमण के साथ–साथ ग्रामीण पर्यटन क्षेत्रों की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। आज देश व राजस्थान में कई गांव ऐसे हैं जो पर्यटन के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान रखते हैं। महिलाऐं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देने में सक्षम हैं जिनमें से एक ग्रामीण पर्यटन भी हैं। ग्रामीण पर्यटन में कम निवेश के साथ सर्वाधिक रोजगार सृजन की क्षमता हैं। यह उद्योग परिश्रम आधारित होने से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान करने में सक्षम हैं। इस शोध कार्य में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से ग्रामीण पर्यटन के विकास में महिलाओं के योगदान की वास्तविक स्थिति, महिला सशक्तिकरण के प्रभाव और समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन किया गया हैं और जो ग्रामीण पर्यटन के विकास में महिलाओं के योगदान से संबंधित अध्ययनों एवं समस्याओं को समझने में उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता हैं। शोधार्थी द्वारा किया जाने वाला यह शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन हैं जो बहुत महत्वपूर्ण एवं सार्थक सिद्ध होगा।

कुँजी शब्दः– ग्रामीण, पर्यटन, आर्थिक, सामाजिक, विकास, योगदान, महिलाएँ

प्रस्तावनाः–

पर्यटन एक ऐसी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने नियमित निवास स्थान से भिन्न किसी स्थान की यात्रा करता है। जिसका उद्देश्य मनोरंजन, विश्रांति, मानसिक तनाव से मुक्ति, ज्ञानवर्धन, व्यवसायिक अवसरों की खोज, सांस्कृतिक, शैक्षणिक उद्देश्य की पूर्ति ही नहीं होता बल्कि इससे मानव अनुभवों का विस्तार और उसके दृष्टिकोण का परिष्कार भी होता हैं। आधुनिक युग में पर्यटन का स्वरूप परम्परागत न होकर व्यापक एवं बहुआयामी हो गया है। जिसमें अब मनोरंजन या अवकाश के साथ शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, पर्यावरणीय अध्ययन और सामाजिक संपर्क भी शामिल है। पर्यटक न केवल उस स्थान के आर्थिक विकास में योगदान करते हैं, बल्कि वे उस क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा के प्रसार के वाहक भी बन जाते हैं।

आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया से पर्यटन का विश्व अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान बढ़ रहा है। जो रोजगार सृजन, सांस्कृतिक एकता, सामाजिक समरसता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का माध्यम भी है। पर्यटन से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं के लोग आपसी संवाद के द्वारा न केवल एक–दूसरे को समझने का अवसर प्राप्त करते हैं, बल्कि उनके वैश्विक सद्भाव और भाईचारे की भावना, ज्ञान एवं अनुभव में भी वृद्धि होती हैं।

देश में राजस्थान ग्रामीण पर्यटन के विकास में अग्रणी राज्य माना जाता हैं, जो अपनी पर्यटन विशेषताओं के कारण देश–विदेश में जाना जाता हैं। ग्रामीण पर्यटन केन्द्र के रूप में ऐसे गांवों को चुना जाता हैं जहां का विशेष ग्रामीण परिवेश, प्राकृतिक वातावरण, खान–पान, कला, ऐतिहासिक स्थल, संस्कृति एवं साहसिक गतिविधियाँ पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम हैं। ग्रामीण क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों के संचालन से स्थानीय समुदाय के

आर्थिक एवं सामाजिक विकास की संभावना भी बढ़ती हैं। अधिकांश गांव आज भी आर्थिक रूप से कृषि पर ही निर्भर हैं जबकि ग्रामीण पर्यटन एक बहुआयामी गतिविधि हैं।

राजस्थान सरकार द्वारा पर्यटन क्षेत्र को वर्ष 1989 में उद्योग का दर्जा दिया और उसके बाद देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करने एवं पर्यटन उद्योग में निवेश को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पर्यटन क्षेत्र के महत्व को समझते हुए इसे अति–प्राथमिक क्षेत्र का दर्जा प्रदान किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में पर्यटन स्थानीय समुदाय को कृषि आधारित मौसमी बेरोजगारी को कम कर अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता हैं और आय एवं निवेश में वृद्धि के साथ प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों को संरक्षण प्रदान करता हैं। ग्रामीण पर्यटन न केवल प्राकृतिक सौंदर्य और पारंपरिक जीवनशैली का अनुभव कराता है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, और स्थानीय संस्कृति के पुनर्जीवन का माध्यम भी बन रहा है। इससे पर्यटक गाँवों के शांत वातावरण, सादगीपूर्ण जीवन, पारंपरिक भोजन, लोककला और हस्तशिल्प से रूबरू होते हैं, जो उन्हें शहरी जीवन की आपाधापी से मुक्ति और मानसिक संतुलन प्रदान करता है।

ग्रामीण पर्यटन का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रहा है। विशेषकर महिलाओं के लिए यह रोजगार और आय के नए अवसर सृजित करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में होम–स्टे, हस्तशिल्प निर्माण, लोकनृत्य और पारंपरिक व्यंजनों के प्रदर्शन जैसे कार्यों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखी जा सकती है। इससे उनकी आर्थिक और सामाजिक आत्मनिर्भरता में भी वृद्धि होती है। राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र का योगदान कृषि एवं कपड़ा उद्योग के बाद सर्वाधिक हैं। भारतीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय और राजस्थान पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान का भारत के घरेलु पर्यटन के क्षेत्र में 6.3 प्रतिशत और विदेशी पर्यटकों के मामले में राज्य का 4.6 प्रतिशत हिस्सा हैं एवं दोनों में राज्य का सातवां स्थान हैं। पर्यटन राजस्थान में एक साल में 30 लाख से अधिक लोगो को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराता हैं। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश महिलाऐं केवल अप्रत्यक्ष क्षेत्र में धार्मिक स्थलों पर ही रोजगार प्राप्त कर रही हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 'राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना–2022' लायी गई। तत्पश्चात् भारत के केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में संतुलित सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण बनाए रखने तथा सामुदायिक मूल्यों और जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2023 में राजस्थान के दो गांवों मेनार (उदयपुर) और नौरंगाबाद (करौली) तथा वर्ष 2024 में देवमाली गांव (ब्यावर) को पुरूष्कृत किया गया।

नगरीकरण की तीव्र प्रक्रिया, रोजगार की तलाश, और शिक्षा की ओर बढ़ते झुकाव के कारण ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा शहरों की ओर पलायन कर रहा है, परिणामस्वरूप ग्रामीण संस्कृति, लोक परंपराएँ और सामाजिक संरचनाएँ धीरे–धीरे क्षीण होती जा रही हैं। आज ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय समुदाय की बढती जागरूकता ने आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, पर्यावरण संरक्षण एवं लैंगिक समानता ने पर्यटन के क्षेत्र में **'महिला सशक्तिकरण एवं ग्रामीण विकास'** में योगदान के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया हैं। ग्रामीण विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता में वृद्धि से स्थानीय लोगो में आत्मनिर्भरता, विशेषकर महिलाओं को पर्यटन संबंधी आर्थिक–सामाजिक गतिविधियों में स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करती हैं। आज महिलाऐं ग्रामीण क्षेत्र में एग्रो–ट्यूरिज्म और इको ट्यूरिज्म के क्षेत्र में भी विकास के लिए प्रयासरत हैं, गोपालपुरा पंचायत, सुजानगढ़, चुरू जिले की '**हरितमा ढ़ाणी**' इको ट्यूरिज्म के लिए जानी जाती हैं, जहाँ की महिलाएं मनरेगा के तहत इस कार्य को करने में प्रयासरत हैं। ऐसे समय में ग्रामीण पर्यटन एक संतुलनकारी भूमिका निभाता सकता हैं। यह न केवल पलायन की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने में सहायक है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी पुनर्जीवित करता है। यह एक महत्वपूर्ण सेवा क्षेत्र होने से मूलभूत सुविधाओं यथा–परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, पेयजल, स्वच्छता, मनोरंजन आदि में सुधार से, पर्यटन की गतिविधियों में कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल सभी श्रेणी के कार्य करने की इच्छुक स्थानीय शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं को शामिल कर सकता हैं।

शोध के उद्देश्य :–

1. ग्रामीण पर्यटन के विकास में महिलाओं के योगदान को जानना।
2. पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार सृजन की संभावना का आकलन करना।
3. ग्रामीण पर्यटन के विकास में आने वाली समस्याओं या कारकों को जानना।

ग्रामीण पर्यटन के विकास में महिलाओं के योगदान की आवश्यकताः–

संयुक्त राष्ट्र पर्यटन और संयुक्त राष्ट्र महिला वेबिनार **'धार्मिक पर्यटन में महिलाओं की सुरक्षा और भागीदारी सुनिश्चित करना'** विषय पर 21–22 अक्टूबर, 2024 को आयोजित हुई जो महिलाओं के विरूद्ध लिंग आधारित हिंसा को रोकने और उसका उचित तरीके से प्रत्युत्तर देने के लिए विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर आने को प्रोत्साहित करती हैं। आज देश के अल्प विकसित बाहरी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए रोजगार और आय के सृजन में ग्रामीण पर्यटन का योगदान अन्य उद्योगों की तुलना में कम हैं। जिसे स्थानीय समुदाय के शिक्षित युवाओं व महिलाओं के योगदान से अधिक प्रभावी बनाया जा सकता हैं। महिलाओं की निम्न आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति तथा कम वेतनमान वाली क्षमता उनकी निम्न सामाजिक स्थिति एवं लैंगिक असमानता में सुधार के लिए उन्हें ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में योगदान और आत्मनिर्भरता में वृद्धि के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जो ग्रामीण परम्पराओं में नवाचार, स्थानीय लोगों एवं स्वयं महिलाओं के प्रयासों से ही संभव हो सकता हैं। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षित व प्रशिक्षण प्राप्त महिलाऐं आर्थिक–सामाजिक विकास के प्रति जागरूकता एवं नवाचारों से पर्यटन उद्यमिता के क्षेत्र में विभिन्न इकाईयों के सफलतापूर्वक संचालन के लिए गाइड, सुरक्षा बल व अन्य सेवाओं में अपनी सक्रिय भूमिका से सतत् ग्रामीण विकास में योगदान दे सकती हैं।

अध्ययन क्षेत्र एवं प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शोधार्थी द्वारा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से प्राथमिक एवं द्वैतीयक दोनों प्रकार के स्त्रोंतो से तथ्यों का संकलन किया हैं। शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्तर पर तथ्यों का संकलन बाराँ जिले के दो ऐताहिसक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों शेरगढ़ का किला, शेरगढ़, (अटरू तहसील) एवं ब्रह्माणी माता मंदिर, सोरसन (अन्ता तहसील) को अध्ययन क्षेत्र के रूप में शामिल किया हैं।

द्वैतीयक स्त्रोंत से तथ्यों को प्राप्त करने के लिए संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, राजस्थान वार्षिक रिपोर्ट, भारतीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय और राजस्थान पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट के अतिरिक्त व्यापक रूप से इन्टरनेट साइटों के अध्ययन को शामिल किया हैं।

ग्रामीण पर्यटन के विकास को बाधित करने वाले प्रमुख कारकः–

1. पर्यटन नीतियों के क्रियान्वयन में विलंब,
2. ग्रामीण लोगों का नगरों की ओर बढ़ता आकर्षण एवं पलायन,
3. प्रशासन की जागरूकता एवं योगदान का अभाव,
4. स्थानीय लोगों की उद्यमिता और निवेश में कमी,
5. पर्यटन के संचालन संबंधी गतिविधियों में उचित प्रशिक्षण का अभाव,
6. पर्यटन स्थलों के नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण की उपेक्षा,
7. पर्यटन स्थल के नजदीक उत्पाद एवं सेवा आधारित बाजार के विकास का अभाव,
8. आवश्यकतानुसार आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता का अभाव,
9. संकटकालीन स्थिति में पर्यटकों की सहायता एवं सुरक्षा की व्यवस्था का अभाव,
10. पर्यटन स्थल के प्रचार–प्रसार के साथ मूलभूत सुविधाओं की जानकारी का उल्लेख नही,
11. स्थानीय लोगों के कृषि एवं अन्य आर्थिक गतिविधियों में संलग्ल होने के कारण, प्रेरणा और जागरूकता के अभाव से महिलाओं के योगदान की उपेक्षा।

उपर्युक्त सभी कारणों के अतिरिक्त स्थानीय समुदाय के कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव, सांस्कृतिक गतिशीलता के कारण ग्रामीण सामाजिक परम्पराओं एवं मूल्यों का ह्रास, पर्यावरण व जल प्रदूषण, अपरिचतों के कारण ग्रामीण जीवन में सहजता की समाप्ति का डर, आदि अनेक दुष्प्रभावों से भी स्थानीय समुदाय में अरूचि होने से ग्रामीण पर्यटन के विकास से संबंधित गतिविधियों का सक्रिय रूप से संचालन नही हो पाता हैं।

निष्कर्षः–

प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण एवं सामान्यीकरण के आधार पर बाराँ जिले के दो ऐताहिसक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों शेरगढ़ का किला, शेरगढ़,(अटरू) एवं ब्रह्माणी माता मंदिर, सोरसन(अन्ता) के अध्ययन में यह पाया गया कि शेरगढ़ के किले की अपेक्षा सोरसन ब्रह्माणी माता मंदिर में स्थानीय लोगों व महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान अधिक हैं। यह स्थल मूलभूत सुविधाओं के हिसाब से भी संपन्न हो रहा हैं जिनमें प्रमुख अच्छा सड़क मार्ग, प्राकृतिक पर्यावरण, सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस चौकी, सोरसन वन्यजीव अभ्यारण्य की जैव–विविधता, नजदीक भोजन व आवास की सुविधा के कारण लोगों के आकर्षण का

केन्द्र बनता जा रहा हैं जिससे यह स्थल एक पिकनीक स्पॉट के रूप में उभर रहा हैं और इस क्षेत्र से संबंधित गतिविधियों की जानकारी अधिकांश प्रकृति प्रेमियों द्वारा प्रसिद्ध समाचार–पत्रों में भी प्रकाशित की जाने लगी हैं। जबकि शेरगढ़ का किला परवन नदी, सोमनाथ महादेव, लक्ष्मीनारायण मंदिर, चारभुजा मंदिर और दुर्गा मंदिर आदि का ऐतिहासिक महत्व रखते हुए भी सड़क मार्ग, मूलभूत सुविधाओं, आवास व भोजन की सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ होने के कारण पर्यटकों को आकर्षित करने में पीछे हैं। दोनों स्थलों का ऐतिहासिक एंव प्राकृतिक महत्व हैं और दोनों की जानकारी राजस्थान के पर्यटन विभाग की साइट पर उपलब्ध हैं। सोरसन ब्रह्माणी माता मंदिर में महाशिव रात्री के अवसर पर मेले का आयोजन होने के कारण यह स्थानीय लोगो को पर्यटन की गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता हैं और यह स्थल पूरे वर्ष लोगो को पर्यटन एवं पिकनिक स्पॉट की गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करता हैं जबकि शेरगढ़ का किला उचित प्रबंधन के अभाव के कारण वर्षा के मौसम में पर्यटन की गतिविधियों के लिए सही नही हैं यहां इस मौसम में संपूर्ण स्थल का मार्ग व किला वर्षा से प्रभावित रहता हैं।

अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित वे पर्यटन स्थल, जहाँ मूलभूत सुविधाएँ जैसे परिवहन, आवास, संचार, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पेयजल की व्यवस्था उपलब्ध हैं, पर्यटकों के लिए अधिक आकर्षण का केंद्र बनते हैं। ऐसे स्थलों पर पर्यटकों को न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव होता है, बल्कि उन्हें ग्रामीण जीवन की सादगी, आत्मीयता और लोकसंस्कृति से भी परिचित होने का अवसर मिलता है। इस कारण से, धार्मिक और प्राकृतिक महत्व वाले पर्यटन स्थल वर्तमान समय में ऐतिहासिक स्थलों की अपेक्षा अधिक संख्या में पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन का एक प्रमुख पक्ष यह भी है कि यह न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक–आर्थिक विकास का भी एक प्रभावशाली उपकरण बन सकता है। स्थानीय समुदायों, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं, की सक्रिय भागीदारी से यह क्षेत्र आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन और रोजगार सृजन की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दे सकता है। राजस्थान में अनेक महिलाएँ पर्यटन स्थलों पर होम–स्टे, लोककला, पारंपरिक भोजन, हस्तशिल्प निर्माण और लोकनृत्य जैसी गतिविधियों के माध्यम से पर्यटन के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं, जिससे उनके आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ सामाजिक स्थिति में भी सुधार देखने को मिल रहा है।

सुझावः–

1. नीतियों के क्रियान्वयन के लिए पर्यटन के विकास योग्य ग्रामीण क्षेत्रों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पर्यटन की प्रक्रियाओं को प्रारंभ कर देना चाहिए ताकि स्थानीय लोगों पर्यटन की गतिविधियों के बारे जानकारी हो।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों की पहुँच को सुगम करने के लिए एकाएक परिवहन के साधनों का विस्तार संभव नहीं हैं अतः ऐसे स्थलों के भ्रमण के इच्छुक पर्यटकों के लिए सुविधानुसार प्रतिदिन या साप्ताहिक रूप से सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के अन्तर्गत परिवहन की व्यवस्था की जा सकती हैं एवं दूरस्थ स्थानों के लिए ऑनलाईन बुकिंग और ऑन–स्पॉट बुकिंग की व्यवस्था को सुनिश्चित किया जा सकता हैं।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों की सुविधाओं के अनुरूप व्यवस्था एवं प्रबंधन का ध्यान रखते हुए पर्यटन गतिविधियों के संचालको एवं स्थानीय समुदाय को पर्यटन की गतिविधियों में शामिल होने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जा सकता हैं।
4. पर्यटन स्थलों को सुरक्षित बनाने के लिए पर्यटन गतिविधियों के संचालन में अनिवार्य पंजीकरण की प्रक्रिया को शामिल किया जा सकता हैं। जिसमें पर्यटन गतिविधियों के संचालनकर्ता और पर्यटक दोनों शामिल हो सकते हैं। इससे पर्यटन स्थलो पर असुरक्षा संबंधी गतिविधियों पर नियंत्रण पाया जा सकता हैं।
5. प्रशासन की निरन्तर जागरूकता एवं योगदान से पर्यटन स्थलों को सुरक्षित, सुविधाजनक, आकर्षक एवं मनोरंजनपूर्ण बनाया जा सकता हैं।
6. विभिन्न विकास योजनाओं के सहयोग से पर्यटन स्थलों का नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण करना संभव हैं यथा– मनरेगा के योगदान से ग्रामीण पर्यटन क्षेत्रों का विकास हो सकता हैं।
7. पर्यटन स्थल के निकट स्थित नगर में स्थानीय उत्पाद एवं सेवा आधारित बाजार के विकास से ग्रामीण पर्यटन के विकास को गति दी जा सकती हैं।
8. पर्यटन स्थल पर आधारभूत सुविधाओं के विकास एवं स्थानीय समुदाय के सहयोगात्मक संबंधों के कारण पर्यटकों को पर्यटन की गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया जा सकता हैं।
9. संकटकालीन एवं असुरक्षा की स्थिति में पर्यटकों की सहायता की व्यवस्था के लिए एकीकृत सुरक्षा व्यवस्था का विकास कर अपराधिक घटनाओं को रोका जा सकता हैं एवं ऐसे ही स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की समस्याओं को एकीकृत कर तत्काल सेवा प्रदान की जा सकती हैं।

10. पर्यटन स्थलों पर मूलभूत सुविधाओं यथा–भोजन, आवास, परिवहन, स्वास्थ्य, मनोरंजन, साहसिक गतिविधियों की जानकारी पर्यटन स्थल के विज्ञापन एवं प्रचार–प्रसार के साथ ही उपलब्ध करवायी जा सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ–सूची:–

पुस्तकें:–

1. Sinha, V. K. (2008): "Historical and Cultural tourism in India", enclave publishers, Jaipur.
2. Reddy, P. Shiva Shankar (2012): "Rural Tourism of Handicrafts in India", Kanishka Publishers and Distributors, New Delhi.
3. Das, S. (2019): Towards the development of Sustainable Tourism in Sikkim, India: Issues and Challenges, International Journal of Research in Social Sciences. a(2), 575-592
4. Chettri, M. (2023): Emptying the landscape: Outsider place-making, tourism and migration in Sikkim, India. Landscape Research, 48(1), 1-12
5. कुमार हेमन्त, (2023): राजस्थान में पर्यटन की वर्तमान स्थिति और पर्यटन विकास की संभावनाएं: एक अध्ययन, आईजेआरटीआई, वॉल्यूम–8, इस्स्यू–5

वेबसाइटें:–

6. www.rajasthantourism.gov.in
7. www.tourrajasthan.com
8. www.risingrajasthan.gov.in
9. https://hi.wikipedia.org
10. https://www.unwto.org